SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारतीय समाज में धन के प्रति सोच में परिवर्तनः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

चित्रा खोटे, अर्थशास्त्र विभाग
शासकीय राजीव लोचन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजिम, जिला गरियाबंद, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
चित्रा खोटे
E-mail : chitrakhote20@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 07/02/2026
Revised on : 10/04/2026
Accepted on : 19/04/2026
Overall Similarity : 00% on 11/04/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Apr 11, 2026 (01:14 PM)
Matches: 0 / 4081 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

भारतीय ज्ञान एवं परम्परा में धन को धर्म और आध्यात्म से जोड़ा गया हैं। धन अर्जन की प्रक्रिया में धर्म आधारित व्यवस्था कर नैतिकता को स्थान दिया गया हैं, लेकिन वर्तमान समय में यह विचार कितना प्रासांगिक है इस बात का विश्लेषण यह शोध पत्र करता हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय जन मानस के धन के प्रति सोच में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन किया गया है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों, वेदों एवं उपनिषदों में जो आर्थिक विचार हैं, क्या वह विचार अभी भी लोगों में है? शोध पत्र के माध्यम से वर्तमान पीढ़ी के लोगों की धन के प्रति क्या सोच है? क्या व्यक्ति आज धन को ही सर्वोपरि मानता है? प्राचीन भारतीय दर्शन के आर्थिक विचारों का अध्ययन करना साथ ही भारतीय परंपरा और आधुनिक सोच कर तुलनात्मक अध्ययन करना, धन के अर्जन से होने वाली सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्या–क्या परिवर्तन हो रहे हैं उसका अध्ययन करना एवं वर्तमान आर्थिक नीतियों में नैतिक और सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी का अध्ययन करना इसका उद्देश्य है। यह अध्ययन प्राथमिक समंकों पर आधारित हैं। सूचनादाताओं से विभिन्न जानकारी प्राप्त कर उसका विश्लेषण किया गया हैं। इनमें मुख्य रूप से उच्च शिक्षित वर्ग सम्मिलित है। शोध अध्ययन में पाया कि आज वर्तमान समय में भी व्यक्ति धन को सर्वोपरि नहीं मानता है। वैदिक और उपनिषद के आर्थिक विचार मौजूद है, लेकिन जीवन यापन और आधुनिक जीवन शैली के दबाव में उसने धन को महत्व देना जरूरी समझते है। वह पुराने धन संबंधी सोच और नए जीवन शैली के तनाव के बीच संघर्ष की स्थिति में है, जहां वह सोच से तो वैदिक है, लेकिन कर्मों में धन की आवश्यकता पड़ती है, इसलिए धन को महत्व देना उसकी मजबूरी बन रही है।

मुख्य शब्द

भारतीय ज्ञान, परंपरा, सामाजिक समानता, धन, आधुनिक सोच एवं आर्थिक नीतियां.

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान और परंपरा में धन की महत्वपूर्ण भूमिका स्वीकार की गई है किंतु सदैव से धन को साधन के रूप में मान्य किया गया है न की साध्य के रूप में । धर्म ,अर्थ, काम और मोक्ष चार पुरुषार्थ में अर्थ दूसरे स्थान पर माना गया है। अथर्ववेद में जीवन के व्यावहारिक पहलुओं जैसे– संपदा और सुरक्षा से संबंधित प्रार्थनाएं शामिल है। धन के उपयोगिता के बारे में उल्लेख करते हुए दान के सत्त्विक, राजसिक, तामसिक प्रकार बताएं गए है। श्रीमदभगवद्गीता के अनुसार धन का श्रेष्ठ उपयोग सात्त्विक दान है। दान (बिंतपजल) के महत्व और उसके प्रकारों पर कई श्लोक हैं जिनमें अध्याय 17, श्लोक 20 सबसे प्रमुख है, जो बताता है कि जो दान कर्तव्य समझकर, उचित देश, काल और पात्र को बिना किसी प्रतिफल की आशा के दिया जाए, वही सात्त्विक दान है, जो सर्वश्रेष्ठ है; " दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे। देशे, काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्" (17.20) जबकि अन्य श्लोक (जैसे 17.21, 17.22) बदले की भावना या अनिच्छा से किए गए दान को निम्न श्रेणी का माना गया है। वेदों में धन को साध्य (अंतिम लक्ष्य) नहीं, बल्कि एक साधन माना गया है जिसे धर्म और अर्थ जीवन के उद्देश्यों में से एक के लिए सही मार्ग (यथा कर्म) से कमाया और सदुपयोग किया जाना चाहिए। ऋग्वेद (X–31–2) में 'धन' के सही मार्ग से प्राप्ति और अथर्ववेद (III.24.5) में समृद्धि के मंत्र में आता हैं– " समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि। सम्यञ्चो अग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः'' जो बताते हैं कि धन का उपयोग आत्मिक उन्नति और दूसरों की मदद के लिए हो, न कि केवल भौतिक सुख के लिए। अथर्ववेद में धन को सिर्फ संपत्ति से बढ़कर अन्न एवं चरित्र की प्रचुरता के प्रतीक के रूप में माना गया है। धन का उपयोग लालच के लिए नहीं, बल्कि सभी के सामूहिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए होना चाहिए। धन को भौतिक अभौतिक रूप में इसमें वर्गीकृत किया गया है। हिंदू धर्म के अनुसार जीवन को चार आश्रमों में बांटा गया है। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम एवं सन्यास आश्रम, चारों आश्रमों के संचालन में धन की भूमिका महत्वपूर्ण है। धन ही आश्रमों को भोजन आश्रय और जीवन के भौतिक जरूरत को पूरा करने के योग्य बनाता है, जिससे व्यक्ति आध्यात्मिक प्रगति कर सके। विशेष कर गृहस्थ आश्रम दूसरों के भरण–पोषण के लिए अन्न और धन का उत्पादन करता है, जो कि शेष तीनों आश्रमों को आधार प्रदान करता है। वर्ण व्यवस्था में भी धन को महत्व स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। यहां समाज की आर्थिक गतिविधियां संसाधन का आवंटन और आर्थिक असमानताओं को नियंत्रित करने की बात कही गई है। भारतीय ज्ञान और परंपरा में धन को धर्म आध्यात्मिकता से जोड़ा गया है लेकिन आज के बदलते परिवेश में धन के प्रति उच्च शिक्षित लोगों की सोच में क्या परिवर्तन हो रहा है? क्या अब लोग धन अर्जन को ही महत्व देने लगे हैं अथवा अभी भी आध्यात्मिकता से लोग जुड़े हुए हैं? क्या धन अभी भी लोगों के लिए साधन ही है अथवा यह साध्य बनता जा रहा है? इन्हीं सभी प्रश्नों पर यह शोध पत्र प्रकाश डालता है।

अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय समाज में धन के प्रति लोगों के विचारों में आए हुए परिवर्तन का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस विषय पर अनेक विद्वानों के द्वारा शोध पत्र एवं आलेख का प्रकाशन हुआ है लेकिन भारतीय समाज में धन अर्जन की जो प्रवृत्तियां है उसमें किस प्रकार से परिवर्तन आया है? इसका स्पष्ट विश्लेषण प्रस्तुत करने के संदर्भ में यह प्रथम शोध पत्र है, जिसमें इस बात का विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार से वर्तमान समाज में भले ही वह अल्प मात्रा में ही हो धन के प्रति लोगों के विचार में बदलाव उत्पन्न हुआ है और यह बदलाव धीरे–धीरे हमें पश्चिम की उपभोगवादी प्रवृत्ति या हम यह कहे कि धन अब जीवन का मूल उद्देश्य के रूप में परिवर्तित होने की ओर तेजी के साथ अग्रसर होगा। प्रस्तुत शोध पत्र विषय की गहराईयों का विश्लेषण करता है, जो की यह बताने में महत्वपूर्ण होगा कि किस प्रकार से भारतीय समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता और प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों में वर्तमान समय में धन के प्रति सोच में परिवर्तन आया है।

साहित्य समीक्षा

इस विषय पर अनेक विद्वानों के द्वारा शोध पत्र एवं आलेख का प्रकाशन हुआ है जिसमें से कुछ प्रमुख– संदीप कुमार एवं स्वाति गुप्ता (2010), धनंजय वासुदेव द्विवेदी (2016), अशोक मंडा (2017), देवलीना चटर्जी तन्वी केसवानी एवं संजय गुप्ता (2018), सतीश देवधर (2018), चौतन्या उगले और संजय डी सिंह (2019), मानचंदा रिंपले (2020), अरेना पद्दे एवं आकाश सदानंद (2023), आदि ने विभिन्न शीर्षकों के माध्यम से अध्ययन किया हैं। पूर्व में हुए अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में धन के प्रति दृष्टिकोण समय, सामाजिक परिवर्तनों और वैश्वीकरण के प्रभाव से बदल रहा है। आज लोग धन, सफलता, नैतिकता आदि को कैसे देखते हैं। भारतीय समाज में धन केवल भौतिक संपत्ति नहीं बल्कि सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना गया है। प्राचीन ग्रंथों और ज्ञान परंपरा में धन का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं बल्कि समाज और परिवार के कल्याण से जोड़ा गया था। समय के साथ वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण और आधुनिक आर्थिक नीतियों के प्रभाव से धन के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। पहले किए गए शोध इस विषय को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित हैं:

1. प्राचीन भारतीय दर्शन के आर्थिक विचारों का अध्ययन करना।
2. भारतीय परंपरा और आधुनिक सोच का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. भारतीय समाज में समय के साथ धन के प्रति लोगों की सोच में आए परिवर्तन का अध्ययन करना।
4. धन अर्जन से होने वाली सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का अध्ययन करना।
5. वर्तमान आर्थिक नीतियों मैं नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

उपरोक्त शोध में लोगों की धन के प्रति सोच में परिवर्तन को ज्ञात करने हेतु गूगल फॉर्म द्वारा एक सर्वे किया गया है और प्राथमिक आंकड़ो का संकलन किया गया है। इसका सैंपल साइज 76 है इस सैंपल की विशेषताएं हैं कि इसमें कुल 76 लोगों ने भाग लिया इसमें लिंग वितरण को नहीं लिया गया है इसलिए यह लिंग तटस्थ है। इसमें मुख्यतः ग्रामीण शहरी और 18 से 25 वर्ष से लेकर 50 वर्ष से अधिक के उच्च शिक्षित लोगों को शामिल किया गया है। इस संदर्भ में यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि भारतीय समाज में धन के प्रति सोच में यह परिवर्तन कैसे हुआ और क्या वर्तमान परिदृश्य में शहरी उच्च शिक्षित युवा वर्ग की सोच धन केन्द्रित हो गई है? क्या उच्च शिक्षित्त युवा वर्ग की धन के प्रति अध्यात्मिक सोच में परिवर्तन हो रहा है? इसका विश्लेषण प्रस्तुत करत हैं।

सूचनादाताओं से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण

शोध अध्ययन सिर्फ "धन के प्रति सोच" तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय परंपरा और आधुनिक सोच का तुलनात्मक अध्ययन भी है। उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं का सांख्यकीय विश्लेषण निम्न प्रकार से किया गया हैं:

1. **मेरे लिए धन जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य है:** 1. धन को जीवन का मुख्य लक्ष्य मानने वाले 35.5 प्रतिशत पूर्ण सहमत है यह मानते हैं कि आधुनिक आर्थिक परिस्थितियों में धन जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह वर्ग शहरी, शिक्षित और प्रतिस्पर्धी परिवेश से आता है, जहाँ आर्थिक सुरक्षा को जीवन की प्राथमिक आवश्यकता माना जाता है। इस सोच पर वर्तमान बाजार–केन्द्रित जीवनशैली, बढ़ते खर्चे और करियर–केंद्रित जीवन का प्रभाव हो सकता है। 2. धन को मुख्य लक्ष्य नहीं मानने वाले लगभग 37.6 प्रतिशत हैं, जो धन को जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य नहीं मानती। यह समूह भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों तथा समग्र जीवन–दृष्टि को ज्यादा महत्व देता है। यह संकेत करता है कि परंपरागत मान्यताएँ जहाँ धन एक साधन था, उद्देश्य नहीं अभी भी लोगों की सोच में मौजूद हैं। लगभग 26.3 प्रतिशत लोग अनिश्चित हैं। यह दर्शाता है कि इस विषय पर समाज में मूल्य–संघर्ष मौजूद है अर्थात् लोग समझ नहीं पाते कि आधुनिक आर्थिक दबावों के बीच धन को कितना महत्व दें। यह वर्ग जीवन में संतुलन, नैतिकता और आर्थिक सुरक्षा तीनों के बीच सही रास्ता चुनने की दुविधा झेल रहा है।
2. **आज का समाज धन को ही सफलता का पैमाना मानता है:** उत्तरदाताओं के उत्तर अत्यंत स्पष्ट और लगभग एकमत दिखाई देते हैं, धन–केन्द्रित सफलता की धारणा से सहमत लोग लगभग 91 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि आज के समाज में सफलता का प्रमुख मापदंड ''धन'' ही बन गया है। यह अत्यधिक उच्च प्रतिशत आधुनिक समाज की प्रचलित सोच, मूल्य–व्यवस्था और सामाजिक तुलना को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। बढ़ती आर्थिक प्रतिस्पर्धा, करियर और आय पर आधारित सामाजिक प्रतिष्ठा, उपभोक्तावाद और दिखावे की संस्कृति, सोशल मीडिया पर आर्थिक उपलब्धियों का महिमामंडन, यह दर्शाता है कि समाज में 'धन' को प्रतिष्ठा, सम्मान और सफलता के साथ गहराई से जोड़ दिया गया है। बहुत कम लोग 5.3 प्रतिशत इस बात पर निश्चित नहीं थे। इसका कारण यह है कि वे समाज की दिशा तो समझते हैं, लेकिन व्यक्तिगत रूप से इस सोच का पूरा समर्थन नहीं करते। यह समूह मूल्य–संघर्ष में है समाज धन को महत्व देता है, पर व्यक्ति स्वयं निश्चित नहीं है कि यह सही है या नहीं हैं।, असहमत 2.6 प्रतिशत और पूर्णतः असहमत 1. 3 प्रतिशत कुल मिलाकर केवल 3.9 प्रतिशत यह अत्यंत छोटा समूह है। यह संकेत करता है कि आज के समय में समाज में ऐसे बहुत कम लोग रह गए हैं जो सफलता को धन से स्वतंत्र मानते हैं। यह वर्ग या तो आध्यात्मिक विचारधारा से जुड़ा है या उनकी जीवन परिस्थितियाँ आर्थिक तुलना से प्रभावित नहीं हैं।

3. **क्या आप कभी दान, सेवा या साझा उपयोग को धन से ऊपर मानते हैं?**
इस प्रश्न के उत्तर से समाज की नैतिकता, सामाजिक चेतना और परंपरागत मूल्यों की स्थिति का संकेत मिलता है। परिणाम तीन अलग समूहों में बँटते हैं:

3.1. **दान–सेवा को धन से ऊपर मानने वाले:** 56.6 प्रतिशत उत्तरदाता धन से अधिक मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देते हैं। यह दर्शाता है कि शिक्षित और शहरी समाज के भीतर भी नैतिकता और सामाजिक कल्याण की भावना गहराई से मौजूद है। भारतीय परंपरा (दान, परोपकार, सेवा) की जड़ें अब भी मजबूत हैं। लोग सामाजिक समानता और सहयोग को केवल आर्थिक लाभ से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।

3.2. धन को दान–सेवा से ऊपर मानने वाले केवल 13.2 प्रतिशत लोग स्पष्ट रूप से मानते हैं कि धन अधिक महत्वपूर्ण है। यह समूह अत्यधिक व्यावहारिक सोच, आधुनिक आर्थिक दबाव, व्यक्तिगत आकांक्षाओ से प्रभावित हो सकता है।

3.3 परिस्थिति–आधारित सोच वाले 30.03 प्रतिशत (कभी–कभी) यह समूह सबसे दिलचस्प है ये लोग बताते हैं कि दान, सेवा को धन से ऊपर रखना परिस्थिति पर निर्भर करता है। इसका अर्थ है कि जीवन में कुछ स्थितियों में धन महत्वपूर्ण हो सकता है किन्तु कुछ स्थितियों में नैतिकता और सामाजिक सेवा को अधिक महत्व दिया जा सकता है। यह भारतीय समाज में संतुलित जीवन–दृष्टि की एक बड़ी झलक है यहाँ न तो धन को पूरी तरह सर्वोच्च माना जाता है और न ही दान–सेवा को हर स्थिति में पहला स्थान मिलता है।

4. आपके अनुसार जीवन में संतुलन ज़रूरी है या धन अर्जन ही प्राथमिकता होनी चाहिए? इस प्रश्न के उत्तर समाज की मूल जीवन–दृष्टि को सीधे दर्शाते हैं। परिणाम अत्यंत स्पष्ट हैं: जीवन में संतुलन को प्राथमिकता देने वाले 94.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि जीवन में संतुलन बनाए रखना धन अर्जित करने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यह संकेत देता है कि लोग धन की आवश्यकता को स्वीकारते हैं, लेकिन उसे जीवन के संपूर्ण अर्थ के रूप में नहीं देखते। संतुलन को प्राथमिकता देने का अर्थ है– काम और परिवार में सामंजस्य, मानसिक स्वास्थ्य को महत्व, मूल्यों और नैतिकता का संरक्षण, आध्यात्मिक और भावनात्मक संतुष्टि की जरूरत। यह भारतीय ज्ञान परंपरा में वर्णित धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के संतुलित जीवन मॉडल से मेल खाता है। धन अर्जन को प्राथमिकता देने वाले केवल 5.3 प्रतिशत बहुत ही छोटा हिस्सा यह मानता है कि जीवन का मुख्य लक्ष्य धन कमाना है। यह दर्शाता है कि अत्यधिक भौतिकवादी दृष्टिकोण समाज में मौजूद तो है लेकिन इसका प्रभाव सीमित है। यह समूह संभवतः प्रतिस्पर्धी करियर, आर्थिक दबाव, शहरी जीवन–शैली से प्रभावित हो सकता है।

5. क्या आपने कभी भारतीय ग्रंथकृजैसे गीता, अर्थशास्त्र, उपनिषद आदि में जुड़े विचार पढ़े हैं? अध्ययन में पाया 40.8 प्रतिशत जनसंख्या भारतीय ज्ञान परंपरा से प्रत्यक्ष रूप से परिचित है। यह वर्ग भारतीय दार्शनिक और आर्थिक विचारों को पढ़कर समझने का प्रयास करता है। 23.7 प्रतिशत ने 'नहीं' कहा, जो दर्शाता है कि एक महत्वपूर्ण समूह ऐसे लोगों का है जिनकी पहुँच इन ग्रंथों तक नहीं है। 35 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिन्होंने स्वयं ग्रंथ तो नहीं पढ़े, लेकिन अपने बुजुर्गों से विचार सुने हैं। यह दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं है, बल्कि लोक कथाओं, पारिवारिक परंपराओं और मौखिक ज्ञान के माध्यम से भी समाज में प्रेषित होती रहती है।

6. क्या आप मानते हैं कि वर्तमान आर्थिक नीतियों में नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी है? इस प्रश्न पर 89.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'हाँ' कहा है। लोग वर्तमान आर्थिक नीतियों को नैतिक सिद्धांतों से दूर, सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति उदासीन तथा आम नागरिकों की अपेक्षाओं से कमतर मानते हैं। जनता को एहसास है कि नीतियों का उद्देश्य केवल आर्थिक विकास न होकर समावेशी विकास और सामाजिक कल्याण भी होना चाहिए। केवल 3.9 प्रतिशत लोगों ने 'नहीं' कहा, जो यह मानते है कि वर्तमान आर्थिक नीतियाँ नैतिक और सामाजिक रूप से पर्याप्त हैं। सरकार की नीतियों पर जनता का भरोसा नैतिकता के संदर्भ में कमजोर है।

7. भारतीय परंपरा में 'धन' को नैतिकता के साथ जोड़कर देखा गया है मैं इससे सहमत हूँ– 70 प्रतिशत उत्तरदाता यह स्वीकार करते हैं कि भारतीय परंपरा में धन का संबंध केवल भौतिक संपत्ति नहीं, बल्कि नैतिक आचरण और धर्मसम्मत कमाई से भी है। समाज में "धन" को केवल आर्थिक संसाधन नहीं माना जाता बल्कि "नैतिक–संपन्न जीवन" का हिस्सा भी समझा जाता है। पुरानी शिक्षाएँ जैसे धर्म, अर्थ, काम ,मोक्ष की अवधारणा आज भी लोगों की सोच में गहराई से बसती है। 12.5 प्रतिशत इससे असहमत है, जिससे पता चलता है कि अधिकांश लोग धन को नैतिक मानदंडों से जोड़ते हैं, असहमति मुख्यतः आधुनिक जीवन के प्रभाव या मूल्य–दृष्टि के बदलाव से आ सकती है। 17.1 प्रतिशत निश्चित

नहीं हैं मानते हैं, ये लोग किसी भी ओर दृढ़ता से नहीं झुकते। उन्हें भारतीय परंपरा, नैतिकता और धन के दर्शन पर अधिक जानकारी की आवश्यकता है या उनके अनुभव मिश्रित हैं जिससे वे निर्णय नहीं कर पा रहे।

8. किन ग्रंथों में आर्थिक जीवन या 'अर्थ' के बारे में जानकारी दी गई है? इस प्रश्न से स्पष्ट होता है कि आम जनता का ज्ञान मुख्यतः एक ही स्रोत तक सीमित है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र 86.5 प्रतिशत लोग भारतीय आर्थिक चिंतन के संदर्भ में केवल एक ही ग्रंथ, कौटिल्य का अर्थशास्त्र को अच्छी तरह जानते हैं। अर्थशास्त्र का नाम स्कूल–कॉलेज की किताबों, प्रतियोगी परीक्षाओं और आम चर्चाओं में अधिक आता है, इसलिए लोग इसे पहचानते हैं। इससे यह स्पष्ट हैं कि भारतीय आर्थिक परंपरा की समझ बहुत संकुचित है और एक ही पुस्तक तक सीमित होकर रह गई है। 26.3 प्रतिशत लोगों ने रामायण–महाभारत इन महाकाव्यों में आर्थिक व शासन–संबंधी दृष्टिकोण मौजूद हैं माना हैं। लोग इन्हें धार्मिक कथाओं के रूप में तो जानते हैं, लेकिन राजनीति, शासन और अर्थव्यवस्था से जुड़ी शिक्षाओं को बहुत कम लोग पहचानते हैं इसलिए यह अपेक्षाकृत कम प्रतिशत जन–जागरूकता की कमी को दर्शाता है। उपनिषद् 19.7 प्रतिशत उपनिषद जीवन–दर्शन आधारित ग्रंथ हैं और इनमें प्रत्यक्ष आर्थिक सिद्धांत कम हैं इसलिए लोगों द्वारा इन्हें आर्थिक ग्रंथ के रूप में कम पहचाना जाना स्वाभाविक है। यह वर्ग 'धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष' जैसे व्यापक सिद्धांतों से अभी भी दूर है। पुराण 14.5 प्रतिशत यह सबसे कम प्रतिशत है, जो यह संकेत देता है कि भारतीय परंपरा के विविध ग्रंथों में मौजूद आर्थिक विचारों के प्रति जागरूकता अत्यंत सीमित है। अधिकांश लोग पुराणों को केवल धार्मिक कथा मानते हैं, न कि आर्थिक–सामाजिक जीवन का मार्गदर्शक।

9. आपके अनुसार ''अधिक धन अर्जन'' से समाज में कौन–से परिवर्तन आ रहे हैं? सर्वेक्षण के परिणामों से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं का एक बड़ा हिस्सा यह मानता है कि अधिक धन अर्जन की प्रवृत्ति आज के समाज में कई महत्वपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन ला रही है। चूँकि इस प्रश्न में प्रतिभागियों को एक से अधिक विकल्प चुनने की अनुमति थी, इसलिए उनके उत्तर समाज में चल रहे व्यापक रुझानों को दर्शाते हैं।

9.1 **परिवार के लिए समय की कमी:** 69.7 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि धन अर्जन को प्राथमिकता देने के कारण परिवार के साथ बिताया जाने वाला समय कम होता जा रहा है। यह सामाजिक संरचना पर सीधे प्रभाव को दर्शाता, जैसे कार्य–जीवन संतुलन का टूटना, परिवारिक संवाद में कमी, संबंधों में तनाव बढ़ना, यह परिणाम आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते दबाव और पारिवारिक मूल्यों में कमी को इंगित करता है।

9.2 **प्रतिस्पर्धा और तनाव में वृद्धि:** 78.9 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि अधिक धन की दौड़ ने प्रतिस्पर्धा और मानसिक तनाव को बढ़ा दिया है। सफल होने की अनिवार्यता, निरंतर तुलना, उपलब्धि का दबाव ये सभी आधुनिक आर्थिक सोच के दुष्प्रभाव के रूप में उभर रहे हैं।

9.3 **सामाजिक असमानता में वृद्धि:** 61.8 प्रतिशत लोगों ने माना कि धन अर्जन पर अत्यधिक जोर ने समाज में आर्थिक असमानताओं को बढ़ाया है। गरीब–अमीर की खाई बढ़ना, अवसरों का असमान वितरण, सामाजिक विभाजन में वृद्धि यह दृष्टिकोण वर्तमान आर्थिक नीतियों और सामाजिक संरचना के प्रति जनता की चिंता को दर्शाता है।

9.4 **पारंपरिक मूल्यों में कमी:** 57.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि धन–केंद्रित जीवनशैली ने भारतीय सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को कमजोर किया है। संतोष का महत्व घट रहा है, सामाजिक दायित्व कम हो रहे हैं, परंपराओं और नैतिकता का पालन घट रहा है। ये निष्कर्ष दर्शाते हैं कि आधुनिक आर्थिक व्यवहार भारतीय ज्ञान–परंपरा में वर्णित 'संतुलन, संतोष और नैतिकता' जैसे मूल्यों से धीरे–धीरे दूर होते जा रहे है।

10. **संतोष में ही सुख है:** यह बात आज भी प्रासंगिक है इसके उत्तर में 81.5 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि संतोष जीवन का असली सुख है। यह परिणाम दर्शाता है कि भारतीय समाज में परंपरागत मूल्य और मानसिक संतुलन की अवधारणा अब भी प्रासंगिक है, भले ही आर्थिक और भौतिक महत्व बढ़ा हो। केवल 18.5 प्रतिशत प्रतिशत लोग भौतिक सुख को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं, जो आधुनिक आर्थिक–सामाजिक दबावों को प्रदर्शित करता है।

11. धन के प्रति सोच में हो रहे परिवर्तन को रोकने के लिए क्या किया जा सकता है? इस प्रश्न के उत्तरों से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभागी मानते हैं कि समाज में धन–केंद्रित मानसिकता को संतुलित करने के लिए व्यवहारिक, सांस्कृतिक तथा नीतिगत स्तर पर कदम उठाने की आवश्यकता है।

11.1 48.7 प्रतिशत लोगों का मानना हैं कि दान और सामाजिक सेवा को प्रोत्साहित करना चाहिए। नैतिक जागरूकता को बढ़ाने पर जोर लगभग आधे उत्तरदाताओं का मानना है कि दान, परोपकार और सामाजिक सेवा को बढ़ावा देना

धन–केंद्रित सोच को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

यह संकेत देता है कि युवा और शिक्षित वर्ग नैतिकता– आधारित आर्थिक व्यवहार का समर्थन करता है, और उन्हें लगता है कि सामाजिक सहभागिता से धन के प्रति दृष्टिकोण अधिक संतुलित हो सकता है।

11.2 38.2 प्रतिशत सूचनादाताओं ने माना कि मीडिया में नैतिकता व परंपरा से जुड़े कार्यक्रम बढ़ाना चाहिए। सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आवश्यकता लगभग 38 प्रतिशत प्रतिभागी मानते हैं कि मीडिया में ऐसे कार्यक्रम बढ़ाए जाने चाहिए जो नैतिक जीवन–मूल्यों, भारतीय परंपरा, और संतुलित आर्थिक सोच पर जोर दें। लोग मीडिया की भूमिका को सामाजिक सोच के निर्माण में प्रभावशाली मानते हैं।

11.3. 75 प्रतिशत लोगों का मानना हैं कि आर्थिक नीतियों में सामाजिक दायित्व को शामिल करना चाहिए। इसका अर्थ है कि उत्तरदाता आर्थिक नीतियों में नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और मानवीय मूल्यों को शामिल करने की कड़ी आवश्यकता महसूस करते हैं। समाज को लगता है कि केवल व्यक्तिगत प्रयास पर्याप्त नहीं बल्कि नीतिगत हस्तक्षेप भी आवश्यक हैं।

11.4. 21.01 प्रतिशत लोगों का मानना हैं कि धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों को बढ़ावा देना चाहिए। अपेक्षाकृत कम समर्थन केवल 21 प्रतिशत उत्तरदाता इस विकल्प से सहमत हैं। आधुनिक शिक्षित वर्ग सामाजिक परिवर्तन को केवल धार्मिक आयोजनों के माध्यम से रोकने को प्रभावी नहीं मानता, बल्कि वे अधिक व्यवहारिक और नीतिगत उपायों को प्राथमिकता देते हैं। यह भी संकेत है कि सांस्कृतिक कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण तो हैं, लेकिन धन–केंद्रित सोच को रोकने का प्राथमिक उपाय नहीं माने जा रहे। धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों को सीमित समर्थन मिला है, जो दर्शाता है कि लोग धन से जुड़ी सोच में बदलाव को सामाजिक शैक्षिक और नीतिगत सुधारों के माध्यम से अधिक प्रभावी मानते हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भारतीय समाज आज एक संक्रमणकालीन विचारधारा से गुजर रहा है। व्यक्ति अपनी मूल संस्कृति, नैतिकता और जीवन–संतुलन को अत्यंत महत्त्व देता है, परंतु सामाजिक संरचना, शिक्षा और आर्थिक नीतियाँ उसे धीरे–धीरे धन–केंद्रित जीवनशैली की ओर धकेल रही हैं। व्यक्ति आज भी धन को साधन के रूप में नहीं बल्कि धन साध्य के रूप में स्वीकार करता है । व्यक्तिगत स्तर पर मूल्य आधारित जीवन जीने की इच्छा और सामाजिक स्तर पर धन–प्रधान सफलता के दबाव के बीच उत्पन्न यह विरोधाभास समकालीन भारत की मानसिक तथा सामाजिक वास्तविकता को उजागर करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा विशेषकर अर्थशास्त्र, गीता और उपनिषद् का आर्थिक दृष्टिकोण आज भी लोगों के मूल्य–बोध को प्रभावित करता है, यद्यपि उसका औपचारिक अध्ययन कम किया गया हो।

सुझाव

मूल्य आधारित शिक्षा, सामाजिक दायित्व को प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ और नैतिकता–केंद्रित मीडिया सामग्री आज की आवश्यकता हैं, केवल आर्थिक उन्नति को ही सफलता का पैमाना न माना जाये, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के निर्वहन एवं समाज क हित में किये गए कार्यो को भी प्रमुख स्थान मिलना चाहिए जिससे धन और नैतिकता का संतुलन, जो भारतीय परंपरा का मूल रहा है, आधुनिक आर्थिक जीवन का मार्गदर्शक बन सके।

संदर्भ सूची

1. अथर्ववेद. अथर्ववेद संहिता (पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, व्याख्याकार) अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा (काण्ड 3, सूक्त 24, मंत्र 5). 2015.
2. भगवद्गीता. श्रीमद्भगवद्गीता (स्वामी रामसुखदास, व्याख्याकार) गीता प्रेस, गोरखपुर (अध्याय 17, श्लोक 20). 2018.
3. Chatterjee, D.; Keswani, T. & Gupta, S. (2018) Money attitudes of Indian Adults: an exploratory study. *SSRN Electronic Journal*. https://doi.org/10.2139/ssrn.3683299, Accessed on 10/01/2026.
4. Deodhar, S. (2018) Indian Antecedents to Modern Economic Thought. *IIM*, 30. https://www.iima.ac.in/sites/default/files/rnpfiles/3431835162018-01-02.pdf, Accessed on 01/01/2026.

5. Dwivedi, D. (2016) Wealth & its various aspects as depicted in Vedic literature. *Vedvidya,* 18, 91–117. https://msrvvp.ac.in/ved vidya/28/11_English_Dhananjay_Vasudeo_Dwivedi_28.pdf, Accessed on 08/01/2026.

6. Malu, S. K.; Gupta, S. & Rokade, E. (2025) Trust, charity, and wealth: The role of Indian knowledge system in social finance. *IJIERM,* 12(4), 182–187. http://journal.ijierm.co.in/index.php/ijierm/article/view/2960/2230

7. Manchanda, R. (2020) A gendered study of attitude towards money in Delhi NCR. *Studies in Business and Economics,* 15(1), 115–126. https://doi.org/10.2478/sbe-2020-0010

8. Manda A. (2017) A Theoretical Review on Indian Philosophy and Business Ethics in Present Scenario. *International journal of Research in Management Studies,* ISSN No: 2455-7595 (online), vol 2. http://www.ijrms.com/olvolume2issue10/AshokManda-3.pdf, Accessed on 01/01/2026.

9. Mesquita, I. P. & Salgaonkar, A. S. N. (2023) Aartha: Philosophical significance of economics. *International Journal of Advance and Applied Research,* 10(4) https://philpapers.org/rec/MESAPS-3, Accessed on 30/12/2025.

10. Narasimhan, N.; Bhaskar, K. & Prakhya, S. (2010) Existential beliefs and values. *Journal of Business Ethics,* 96(3), 369–382. *https://link.springer.com › Journal of Business Ethics*

11. Rimple, M. (2020) A Gendered Study of Attitude towards money in Delhi NCR. *Studies in Business and Economics*, 15(1), 115–126. https://doi.org/10.2478/sbe-2020-0010

12. Ugale C. & Singh S. (2019), Indian knowledge tradition's perspective on economics & values. *PIMT Journal of Research, Special Issue,* ISSN No: 2278-7925, 12(1), 49–53. https://management.cessedu.org/indian-knowledge-traditions-perspective-economics-values-0.

****